पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 16.12.2015 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868002130

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् उत्तर प्रदेश

प्रान्तीय कार्यकर्ता बैठक

रविवार, 3 जनवरी 2016, प्रातः 11.30 बजे

स्थानः आर्य समाज चौक,
बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश

सभी साथी समय पर पहुंचे

आनन्दप्रकाश आर्य—अध्यक्ष
प्रवीन आर्य—महामन्त्री

वर्ष-32 अंक-12 पौष-2072 दयानन्दाब्द 191 16 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2015 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.12.2015, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में जन्तर मन्तर पर प्रचण्ड प्रदर्शन

सांसद मल्लिकाजुर्ण खड़गे माफी मांगे व पूरे देश में गौ हत्या पर प्रतिबन्ध की मांग

धरने को सम्बोधित करते सभा प्रधान स्वामी आर्य वेश जी व मंच पर डा. अनिल आर्य, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी रामवेश जी, स्वामी विश्वानन्द जी, स्वामी सौम्यानन्द जी आदि।

नई दिल्ली। बुधवार, 16 दिसम्बर 2015, आर्य समाज की शिरोमणि संस्था ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'' के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश के नेतृत्व में नई दिल्ली के जन्तर मन्तर पर विशाल धरना व प्रचण्ड प्रदर्शन किया गया। स्वामी आर्य वेश ने कहा कि गत दिनों संसद में सांसद मल्लिकाजुर्ण खड़गे ने कहा कि ''आर्य लोग बाहर से आये थे वह विदेशी है'' पूरा आर्य जगत उनके वक्तव्य की कड़ी निन्दा करता है, महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि आर्य लोग ही यहां के मूल निवासी हैं, सृष्टि का प्रारम्भ ही आर्यो से ही हुआ, यह खड़गे की अज्ञानता का परिचायक है, उन्हें अपने इस वक्तव्य के लिये खेद व्यक्त करना चाहिये अन्यथा खुले में हम उन्हें शास्त्रार्थ की चुनौती देते हैं।

साथ ही गौ हमारी आर्य संस्कृति का मूल आधार है तथा करोड़ों लोगो की भावनाये गौ माता से जुड़ी हुई हैं पिछले दिनों इस विषय को उछाल कर कुछ लोगो ने राजनैतिक रोटियां सेकनी का प्रयास किया वह भी शोभनीय नहीं है। हमारी केन्द्र सरकार से मागं है कि पूरे देश में गौ हत्या पर प्रतिबन्ध लगाया जाये।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि आर्य समाज इन मुद्दों को आम जनता के बीच ले जाकर जन आन्दोलन बनायेगा।

धरने को आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासी, विद्धान स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी विश्वानन्द जी, देवेन्द्रपाल वर्मा, स्वामी रामवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, प्रो.विठ्ठलराव आर्य, आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार, प्रो. महावीर मीमांसक, चौ.राजेन्द्र बीसला, रामसिंह आर्य, वैद्य इन्द्रदेव, दर्शन अग्निहोत्री, मायाप्रकाश त्यागी, ठाकुर विक्रम सिंह, प्रतिभा सिंहल, सुषमा शर्मा, विम्मी अरोड़ा आदि ने सम्बोधित किया। आचार्य प्रेमपाल शास्त्री व आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने यज्ञ करवाया। प्रमुख रूप से महेन्द्र भाई, ब्र.दीक्षेन्द्र, पूनम व प्रवेश आर्या, अरूण आर्य, माधवसिंह, रामकुमार सिंह, आनन्दप्रकाश आर्य, प्रवीन आर्य, सुभाष सिंघल, तेजपालसिंह आर्य, गायत्री मीना, कै. अशोक गुलाटी, विकास आर्य, सत्येन्द्रमोहन कुमार, विद्यासागर वर्मा, अमीरचन्द रखेजा, राजेश मेहन्दीरता, सोहनलाल मुखी, धर्मवीर आर्य, बलराज मलिक आदि उपस्थित थे। राष्ट्रपति व प्रधानमन्त्री के नाम ज्ञापन भी दिया गया।

गौ रक्षा यज्ञ का द्रश्य—यज्ञ करवाते आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, गवेन्द्र शास्त्री व महेन्द्र भाई। द्वितीय चित्र में—ठाकुर विक्रम सिंह सम्बोधित करते हुए।

आर्य महिला शक्ति भी रही विरोध प्रदर्शन में आगे व सामने विशाल संघर्षशील सच्चे आर्यो का विशाल समूह ''कार्य दिवस'' होने के बावजूद भारी संख्या में पंहुचा

महान आर्य सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

वैदिक धर्म एवं संस्कृति के उन्नयन में स्वामी श्रद्धानन्द जी का महान योगदान है। उन्होंने अपना सारा जीवन इस कार्य के लिए समर्पित किया। वैदिक धर्म के सभी सिद्धान्तों को उन्होंने अपने जीवन में धारण किया था। देश भक्ति से सराबोर वह विश्व की प्रथम धर्म–संस्कृति के मूल आधार ईश्वरीय ज्ञान ''वेद'' के अद्वितीय प्रचारकों में से एक थे। शिक्षा जगत, राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन, समाज व जाति सुधार, बिछुड़े हुए धर्म बन्धुओं की शुद्धि, दलितों के प्रति दया से भरा हृदय रखने वाले तथा उनकी रक्षा में तत्पर, आर्यसमाज के महान नेताओं में से एक, आदर्श सद्गृहस्थी, कर्तव्य पालन में अपना सर्वस्व व प्राण समर्पित वाले अद्वितीय महापुरुष थे। उनका व्यक्तित्व ऐसा है कि जिसे जानकर प्रत्येक सात्विक हृदय वाला व्यक्ति उनका अनुयायी बन जाता है। महर्षि दयानन्द के बाद आर्यसमाज और देश में उनके समान गुणों वाला व्यक्ति उत्पन्न नहीं हुआ। प्रसिद्ध आर्य वैदिक संन्यासी स्वामी डा. सत्य प्रकाश सरस्वती ने उनसे सम्बन्धित अपने कुछ संस्मरणों को प्रस्तुत करने के साथ उनके कार्यों पर अपनी राय भी दी है। इसी पर आधारित हमारा यह लेख है।

सन् 1916 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अवसर पर लखनऊ में स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने महात्मा मुंशीराम के दर्शन किए थे। 1914–15 में महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत आये थे और जनता में गांधी जी की लोकप्रियता बढ़ रही थी। नरम दल के नेता कांग्रेस से अलग हो गए थे और उन्होंने अपनी आल इण्डिया लिबरल फैडरेशन संघटित करना आरम्भ कर दिया था। गरम दल के व्यक्तियों के हृदय सम्राट् लोकमान्य तिलक जी थे। 8 अप्रैल, 1915 को गुरुकुल कांगड़ी में महात्मा मुंशीराम के आश्रम में मिस्टर गांधी आये और ''महात्मा'' गांधी बन करके वहां से निकले। महात्मा मुंशीराम जी ने ही गांधी जी को गुरुकुल में पधारने पर पहली बार उनको महात्मा शब्द से सम्बोधित किया था, यह महात्मा शब्द इसके बाद आजीवन उनके नाम के साथ जुड़ा रहा। यही गांधी जी के महात्मा गांधी बनने का इतिहास है। सन् 1916 की कांग्रेस में स्वामी सत्यप्रकाश जी ने गांधी जी और मुंशीराम जी दोनों को राष्ट्रभाषा हिन्दी सम्बन्धी एक समारोह में देखा था। दोनों की वेशभूषा की रूपरेखा बराबर उनकी आंखों के समाने बनी रही, ऐसा उन्होंने अपने लेख में वर्णित किया है। तब वहां महात्मा मुंशीराम जी भव्य दाढ़ी, सुदृढ़ शरीर और गले के नीचे पीत वस्त्र तथा गांधी जी अपनी काठियावाड़ी पगड़ी, अंगरखा और नंगे पैर उपस्थित थे। इसके बाद स्वामी सत्यप्रकाश जी प्रयाग आ गये। वहां 'आर्यकुमार सभा' के उत्सव पर स्वामी श्रद्धानन्द जी आये थे और तब स्वामी सत्यप्रकाश जी ने उन्हें निकट से देखा। स्वामी श्रद्धानन्द जी को प्रयाग में नयी सड़क के एक दुमंजिले मकान में ठहराया गया था।

स्वामी सत्यप्रकाश जी ने यह भी वर्णन किया है कि 26 दिसम्बर 1919 को अमृतसर कांग्रेस में स्वामी श्रद्धानन्द स्वागताध्यक्ष थे और पं. मोतीलाल नेहरू अध्यक्ष। किम्वदन्ती है कि दोनों ने एक–दूसरे को पहचाना––दोनों सहपाठी थे बनारस, इलाहाबाद, आगरा या बरेली में से किसी स्थान पर। महात्मा मुंशीराम जी की प्रारम्भिक शिक्षा बरेली में हुई, 1873 में उच्च शिक्षा क्वीन्स कालेज बनारस में, 1880 और पुनः 1888 में कानूनी शिक्षा लाहौर में। महात्मा मुंशीराम जी का नाम श्रद्धानन्द संन्यास के बाद पड़ा। संन्यास उन्होंने 12 अप्रैल 1917 को मायापुर (कनखल) में लिया था। स्वामी सत्यप्रकाश जी सन् 1915–16 में इन्द्र विद्यावाचस्पति और पौराणिकों की बातंप सुना करते थे, क्योंकि 1912–16 तक सनातन धर्म सभाओं की बड़ी धूम थी––ये सनातन धर्म सभाएं धीरे–धीरे निष्क्रिय हो गयीं।

स्वामी सत्यप्रकाश जी ने अपने संस्मरणों में बताया है कि सन् 1925 ई. में मथुरा में जो महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी मनायी गयी थी उसके अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द थे––तब तक उनका स्वास्थ्य गिर चुका था और महात्मा नारायण स्वामी जी वस्तुतः उस समारोह के कार्यकर्त्ता अध्यक्ष थे। आनन्द भवन में होने वाली कांग्रेस की बैठकों में 1922 ई. के बाद भी स्वामी जी इलाहाबाद कतिपय बार आये। 1921 ई. के अप्रैल मास में पं. मोतीलाल जी की पुत्री विजयलक्ष्मी के विवाह में भी स्वामी श्रद्धानन्द जी सम्मिलित हुए थे पर मोपला काण्ड (मालाबार, केरल) के बाद श्रद्धानन्द जी कांग्रेस से धीरे–धीरे अलग हो गये। स्वामी दयानन्द ने मृत्यु के समय आर्यसमाज का नेतृत्व किसी व्यक्ति के हाथ में नहीं छोड़ा था। ईश्वर के भरोसे मानों वे चल दिये। 1883 ई. के बाद स्वयं ही आर्यसमाज में 'व्यक्तियों' का प्रादुर्भाव हुआ। इन व्यक्तियों में श्रद्धानन्द का इतिहास ही आर्यसमाज का इतिहास है। इस युग के अन्य लोगों में महात्मा हंसराज, पं. गुरुदत्त, पं. लेखराम, लाला लाजपतराय, स्वामी दर्शनानन्द और स्वामी नित्यानन्द का भी अभूतपूर्व व्यक्तित्व था।

स्वामी सत्यप्रकाश जी के अनुसार स्वामी श्रद्धानन्द ने इस शती के प्रथम पाद में भारत के इतिहास में मार्मिक भूमिका निभायी। आर्यसमाज में दयानन्द के बाद श्रद्धानन्द–सा दूसरा व्यक्ति देखने में नहीं आया। स्वामी सत्यप्रकाश जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की 1924 ई. में प्रकाशित 'कल्याण–मार्ग का पथिक' आत्मकथा को पढ़ा, उनके पास उनका और गुरुकुल कांगड़ी में श्रद्धानन्द जी सहयोगी आचार्य रामदेव जी द्वारा सम्पादित 'द आर्यसमाज एण्ड इट्स डिटैक्टर्स–ए विण्डिकेशन' प्रसिद्ध ग्रन्थ था। 'दुःखी दिल की पुरदर्द दास्तान' उन्होंने नहीं पढ़ी। (उर्दू में लिखित यह ग्रन्थ आर्यसमाज के आन्तरिक विग्रह की कष्ट कथा है। इसका अनुवाद हरिद्वार निवासी हिन्दी कवि श्री सुमन्त सिंह आर्य ने किया है जो प्रकाशन की प्रतीक्षा में है। कुछ विद्वान इसमें समाहित आलोचनाओं के कारण इसके प्रकाशन की आवश्यकता नहीं समझते। हमारी अनुवादक महोदय से भेंट हुई है। उन्होंने बताया कि यह ग्रन्थ उन्होंने प्रकाशनार्थ आर्यविद्वान डा. महावीर अग्रवाल जी को दिया हुआ है।)। श्रद्धानन्द जी विषयक सबसे अधिक बातें स्वामी सत्यप्रकाश जी को स्वामी श्रद्धानन्द जी पर आस्ट्रेलियाई प्रो. जे.टी.एफ. जार्डन्स की पुस्तक से ज्ञात हुईं।

स्वामी सत्यप्रकाश जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी पर कई टिप्पणियां की हैं। वह लिखते हैं कि गुरुकुल के अनगिनत स्नातकों के कुलगुरु महात्मा मुंशीराम थे, न कि श्रद्धानन्द। मुंशीराम और श्रद्धानन्द तो दो अलग व्यक्तित्व हैं। मुंशीराम के रूप में वे महात्मा थे, गांधी के अत्यन्त निकट, गुरुकुलीय प्रणाली के उन्नायक, शिक्षा के क्षेत्र में अनन्य प्रयोगी तथा टैगोर की समकक्षता के शिक्षाशास्त्री। दूसरा उनका स्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द का रहा––सम्प्रदायवादिता मिश्रित राष्ट्र–उलझनों में फंसे हुए––कभी मालवीय के साथ, कभी महासभा के साथ, कभी उनसे दूर भागते हुए अत्यन्त विवादास्पद व्यक्तित्व, कभी–कभी निर्वाचनों की उलझनों में फंस जाने वाले व्यक्ति। उसका उन्हें पुरस्कार मिला––23 दिसम्बर, 1926 ई. को सायंकाल 4 बजे दिल्ली में अब्दुल रशीद की गोलियों से बलिदान । वे सदा के लिए अमर हो गए। अंग्रेजों की संगीनों के सामने छाती खोलकर खड़ा होने वाला वीर राष्ट्रभक्त संन्यासी श्रद्धानन्द का एक यह तेजस्वी रूप था। (महर्षि दयानन्द के बाद वैदिक धर्म के 7 मार्च, 1897 को एक विधर्मी आततायी द्वारा प्रथम शहीद पण्डित) लेखराम की पंक्ति में खड़ा कर देने वाला ऋषि दयानन्द का असीम भक्त अमर शहीद श्रद्धानन्द।

स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना की और उसे अपने खून से सींचा। आज यह संस्था अपने मूल उद्देश्य व गौरवपूर्ण अतीत से दूर हो चुकी है। यह स्थिति हमें कई बार पीड़ा देती है। 23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस है। अतः इस अवसर पर उनके पावन जीवन चरित्र का अध्ययन कर अपने जीवन को सुधारा व पुण्यकारी बनाया जा सकता है। धर्म की वेदी पर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन चरित्र व उनके ग्रन्थों का अध्ययन कर ही उनको श्रद्धांजलि दी जा सकती है। स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रायः सभी ग्रन्थों को 'श्रद्धानन्द ग्रन्थावली' के नाम से लगभग 27 वर्ष पूर्व 11 खण्डों में प्रकाशित किया गया था। इसका नया भव्य एवं आकर्षक संस्करण दो खण्डों में 'विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408 नई सड़क, दिल्ली' से इसी माह प्रकाशित किया गया है। हम पाठकों को इसे मंगाकर पढ़ने की संस्तुति करते हैं। आईये, स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन व कार्यों को जानकर उनसे प्रेरणा ग्रहण करें और वैदिक धर्म व संस्कृति की सेवा कर अपने जीवन को कृतार्थ एवं सफल करें।

– 196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक व प्रशान्त विहार का उत्सव सम्पन्न

शनिवार, 12 दिसम्बर 2015, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी व अन्तरंग सभा की बैठक महर्षि दयानन्द भवन, आसफ अली रोड़, नई दिल्ली के सभागार में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर श्री दर्शन अग्निहोत्री का स्वागत करते डा. अनिल आर्य, रामकुमार सिंह, महेन्द्र भाई, अनिल हाण्डा, वेदप्रकाश आर्य, विश्वनाथ आर्य, यशोवीर आर्य, बलजीत आदित्य। द्वितीय चित्र–रविवार, 13 दिसम्बर 2015, आर्य समाज, प्रशान्त विहार, दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर ध्वजारोहण श्री प्रदीप गुप्ता ने किया। साथ में प्रधान श्री कृष्णचन्द पाहुजा, डा. अनिल आर्य, आचार्य सुखदेव तपस्वी, सुरेन्द्र गुप्ता, मंत्री सोहनलाल मुखी, सूरज गुलाटी व विनोद कालरा आदि।

आर्य समाज टैगोर गार्डन विस्तार व रेलवे रोड़ रानी बाग का उत्सव सम्पन्न

रविवार, 13 दिसम्बर 2015, आर्य समाज ,टैगोर गार्डन विस्तार, नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव का भव्य समापन हुआ चित्र में डा. अनिल आर्य के साथ प्रधान अशोक आर्य, प्रकाश आर्य, महेश भयाना, सन्दीप आर्य आदि अधिकारी गण। द्वितीय चित्र–आर्य समाज, रेलवे रोड़, रानी बाग, दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर परिषद् के मन्त्री श्री दुर्गेश आर्य का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य,एस.एन.पुरी, योगेन्द्र शर्मा, अवधेश आर्य, रेखा शर्मा, सूरज गुलाटी, राजेन्द्र कुमार निझावन। संचालन मैथली शर्मा ने किया।

आर्य समाज, सैक्टर–4–5, रोहिणी व सैनिक विहार का उत्सव सम्पन्न

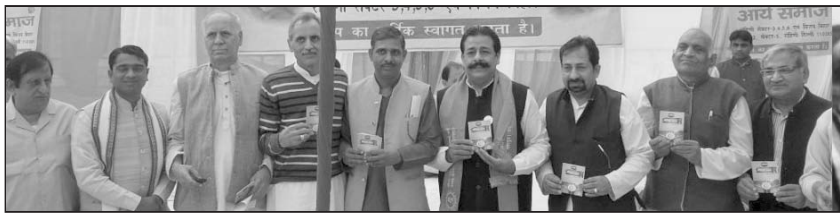

रविवार, 6 दिसम्बर 2015, आर्य समाज, रोहणी, सैक्टर–4–5, दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर त्रिभुवन पार्थ की पुस्तिका का विमोचन करते डा. अनिल आर्य, साथ में सुरेन्द्र गुप्ता, राजीव आर्य, राजेन्द्र तनेजा, सुभाष त्रेहण, आचार्य सतीश सत्यम, महेश भयाना, व्रतपाल भगत। कुशल संचालन मन्त्री सुदेश डोगरा ने किया। द्वितीय चित्र–आर्य समाज, सैनिक विहार, दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर प्रधान ब्रि.कपूर का स्वागत करते डा.अनिल आर्य,मन्त्री विनय खुराना, विनोद गुप्ता, सुदेश खुराना, माता कृष्णा सपरा, राजेन्द्र लाम्बा आदि।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 37 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

आर्य नेता, शिक्षाविद् **डा. अशोक कुमार चौहान** के सानिध्य एवं
युवा वैदिक विद्वान डा. जयेन्द्र आचार्य के ब्रह्मत्व में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 5, 6, 7 फरवरी 2016 (शुक्र, शनि व रविवार)

स्थानः अजमल खाँ पार्क, करोलबाग, नई दिल्ली–110005

विराट् शोभा यात्राः शुक्रवार 5 फरवरी 2016, प्रातः 10:30 बजे

रूटः अजमलखाँ पार्क से चलकर फैज रोड, मॉडल बस्ती, ईस्ट पार्क रोड, डोरीवालान, देशबन्धु गुप्ता मार्ग, आर्य समाज रोड, करोल बाग, मास्टर पृथ्वीनाथ मार्ग होते हुए अजमल खाँ पार्क में दोपहर 1:30 बजे समापन।

मुख्य आकर्षण

* आर्य युवा सम्मेलन * वेद सम्मेलन * शिक्षा–संस्कृति रक्षा सम्मेलन
* भव्य संगीत संध्या * नारी शक्ति सम्मेलन * राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

प्रातः से रात्रि निरन्तर तीनों दिन ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था

1. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या के बारे में 3 जनवरी 2016 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके। सम्पर्कः श्री आदर्श कुमार–9811440502, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री–9810884124
2. कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु व आर्य समाजें अपना यज्ञकुण्ड 3 जनवरी 2016 तक गोपाल जैन–9810756571, कमल आर्य–9953995003, ऋषिपाल शास्त्री–9891148729, अरुण आर्य–9818530543, जयप्रकाश शास्त्री–9810897878 पर आरक्षित करवा लें।

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है
कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली''
के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि–लंगर के लिए आटा, दाल,

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली–110007, मो. 9868661680
E-mail: aryayouthn@gmail.com **Website:** www.aryayuvakparishad.com
Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http:// www.facebook.com/group/aryayouth

आर्य समाज व आर्ष गुरूकुल नोएडा का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

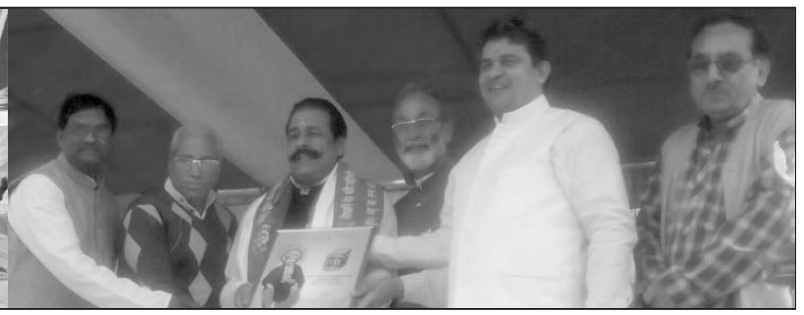

रविवार, 13 दिसम्बर 2015, आर्य समाज, सैक्टर–33, नोएडा के वार्षिकोत्सव पर मंच पर रविन्द्र सेठ–प्रधान, डा.अनिल आर्य, डा. वेदपाल जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी व श्री मायाप्रकाश त्यागी। द्वितीय चित्र–डा. अनिल आर्य का शाल से अभिनन्दन करते डा. जयेन्द्र आचार्य, रविन्द्र सेठ, कै.अशोक गुलाटी व विजेन्द्र कठपालिया आदि।

गुरूकुल गौतम नगर का वार्षिक यज्ञ व आर्य समाज छतरपुर का उत्सव सम्पन्न

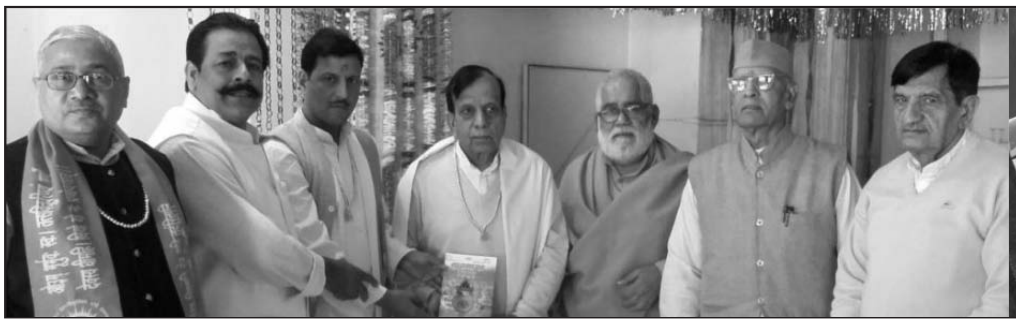

रविवार, 6 दिसम्बर 2015, गुरूकुल गौतम नगर, नई दिल्ली के उत्सव पर दानवीर श्री दर्शन अग्निहोत्री का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, स्वामी प्रणवानन्द जी, पं. सत्यपाल पथिक, आचार्य नरेन्द्र मैत्रय, वेद मिगलानी, रमेश चन्द शास्त्री। द्वितीय चित्र–रविवार, 13 दिसम्बर 2015, आर्य समाज जे. वी. टी. एस. छतरपुर एक्स, नई दिल्ली के उत्सव पर स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी का स्वागत करते डा. अनिल आर्य, जगबीर सिंह आर्य, ओम कुमार, मंत्री व प्रधान ओमप्रकाश यजुर्वेदी।

लाजपत नगर व शक्ति नगर में आर्य सम्मेलन तैयारी बैठक सोल्लास सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आयोजित आर्य महासम्मेलन की तैयारी के लिये दक्षिण दिल्ली की बैठक आर्य समाज लाजपत नगर में श्री राजेश मेहन्दीरता की अध्यक्षता में व उतर दिल्ली की आर्य समाज शक्ति नगर में श्री ओमप्रकाश वर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सभी आर्य जनों ने सम्मेलन को सफल बनाने का विश्वास दिलाया।

आर्य समाज अशोक विहार व नगर शाहदरा का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 6 दिसम्बर 2015, आर्य समाज अशोक विहार, फेज–1, दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर डा.जयेन्द्र आचार्य को सम्मानित करते डा. अनिल आर्य, सत्यपाल गांधी, जीवनलाल आर्य, विजयभूषण आर्य, सतीश शास्त्री व डा. मदनमोहन बजाज। द्वितीय चित्र–आर्य समाज, नगर शाहदरा, दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर डा. अनिल आर्य को सम्मानित करते प्रधान श्री रणवीर आर्य, संजय आर्य, यज्ञवीर चौहान, मन्त्री राजीव कोहली व महेन्द्र भाई।

डा.अनिल आर्य को नयी कार भेंट होगी

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की अन्तरंग बैठक 12 दिसम्बर 2015, महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली में यह निश्चय हुआ कि राष्ट्रीय अधयक्ष डा.अनिल आर्य को नयी कार भेंट की जाये। सभी शुभ चिन्तक अपना सहयोग स्वेच्छापूर्वक प्रदान करके लक्ष्य को पूरा करने में सहयोग प्रदान करें।

– महेन्द्र भाई, महामन्त्री–09013137070

शोक समाचार: विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्री राजीव आर्य (महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा,दिल्ली) का निधन।
2. श्रीमती रूक्मणी देवी आर्या (माता श्रीमती गायत्री मीना) का निधन।
3. श्रीमती स्वर्ण नन्दवानी (प्रीत विहार) का निधन।

रस्म पगड़ी

स्वर्गीय श्रीमती स्वर्ण नंदवानी धर्मपत्नी श्री जी सी नंदवानी (श्री राजिंदर दुर्गा) जी की बहिन का स्वर्गवास 7 दिसंबर को हो गया है। रस्म पगड़ी 18 दिसंबर को सांय 3–5 दुर्गा मंदिर प्रीत विहार में होगी।

दानी महानुभावों से अपील

यदि आप केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों से सन्तुष्ट हैं तो हमें सहयोग करें,कृपया अपना सहयोग परिषद् के खाता सं. 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई.एफ.एस.कोड -SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868002130 पर एस.एम.एस कर दें जिससे रसीद भेजी जा सके। अग्रिम धन्यवाद सहित

– डा. अनिल आर्य, मो.09810117464.

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970